Journal Homepage: -www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI:10.21474/IJAR01/23807
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23807

ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

RESEARCH ARTICLE

प्रेमचंद की कहानियों में प्रकृति ,पर्यावरण और लोक जीवन

प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे

1. सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,श्री. मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय, शंकरनगर ,तह- बिलोली, जि.- नांदेड

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 08 May 2026
Final Accepted: 10 June 2026
Published: July 2026

Key words:-
प्रकृति का चित्रण,पर्यावरण का संरक्षण,, खेत - खलिहान ,प्राकृतिक मौसम,किसानों के जीवन संघर्ष,ग्रामीण पर्यावरण,प्राकृतिक संसाधन,मनुष्य और प्रकृति संबंध । सामाजिक जीवन

Abstract

हिंदी की प्रारंभिक कहानीयां भी पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के साथ-साथ अस्तित्व और उसके संरक्षण की प्रेरणा देती है। वह यह संदेश देती है कि, ,मानव और प्रकृति का संबंध परस्पर निर्भर का है। तथा पर्यावरण की रक्षा ही मानव जीवन और भविष्य की सुरक्षा का आधार है। प्रेमचंद की कहानियों में पर्यावरण केवल प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन नहीं है बल्कि मानव जीवन ,समाज और प्रकृति के बीच गहरे संबंध का दार्शनिक चित्रण भी है। उनके कथा साहित्य में खेत, पेड़, वर्षा - नदियां,पशु -पक्षी और ग्रामीण परिवेश जीवन के अभिन्न अंग के रूप में उपस्थित है ।प्रकृति उनके पात्रों के सुख-दुख, संघर्ष और जीवन मूल्यों से जुड़ी हुई दिखाई देती है ।प्रेमचंद की कहानिओं में जैसे, पूस की रात ,दो बैलों की कथा,ईदगाह और पंच परमेश्वर में ग्रामीण वातावरण का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है। पूस की रात में कड़ाके की ठंड, खेत और प्राकृतिक परिस्थितियों में किसान हल्कू के जीवन संघर्ष को गहराई से व्यक्त करती है। यहां प्रकृति एक निष्प्राण पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कथा के विकास में सक्रिय भूमिका निभाती है। इसलिए पर्यावरण का संरक्षण मानव के नैतिक और सामाजिक दायित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Introduction:-

हिंदी साहित्य में पर्यावरण केवल प्रकृति का चित्रण नहीं है बल्कि मनुष्य और प्रकृति के गहरे संबंधों का प्रतीक भी है । हिंदी कहानियों में पेड़ - पौधे, नदियां, पर्वत, पशु - पक्षी और ऋतुओं के माध्यम से पर्यावरण के महत्व, सुरक्षा और संतुलन का संदेश दिया गया है। प्रेमचंद, फणीश्वरनाथ रेणु ,निर्मल वर्मा तथा अन्य कहानीकारों ने भी अपनी कहानियों में ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक परिवेश का सजीव चित्रण किया है। प्रेमचंद की कहानियों में किसान, खेत, वर्षा और भूमि के माध्यम से प्रकृति पर निर्भर जीवन को दर्शाया गया है । रेणु की कहानियों में गांव का प्राकृतिक सौंदर्य,नदियां, खेत -खलिहान और लोक - जीवन पर्यावरण के साथ सामंजस्य का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं । इन कहानियों के माध्यम से लेखकों ने यह संदेश दिया है कि, यदि मनुष्य प्रकृति का अंधाधुंध दोहन करेगा तो उसके दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगतने पड़ेंगे। हिंदी कहानियों में पर्यावरण का दर्शन भारतीय संस्कृति के उस विचार को भी व्यक्त करता है जिसमें प्रकृति को माता के समान पूजनीय माना गया है। वृक्ष, नदियां और पर्वत केवल प्राकृतिक संसाधन नहीं बल्कि जीवन के आधार और सांस्कृतिक आस्था के केंद्र है। इसलिए पर्यावरण संरक्षण को नैतिक और सामाजिक दायित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

Corresponding Author:-प्रा.डॉ. पी .एम.भुमरे
Address:-सहयोगी प्राध्यापक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष ,श्री. मधुकरराव बापूराव पाटील खतगांवकर महाविद्यालय, शंकरनगर ,तह- बिलोली, जि.- नांदेड

प्रेमचंद की कहानियों में प्रकृति ,पर्यावरण और लोक जीवन :-

प्रेमचंद ने कई कहानियां लिखी है। साथ ही उनकी कहानीयो में कई विषयों का यथार्थ उजागर हुआ है। अन्य सामाजिक समस्याओं के साथ ही पेड़- पौधे, पशु- पक्षी, जीव -जगत का यथार्थ भी सामने आता है। मनुष्य के पूर्वज पर्यावरण प्रेमी थे और प्रकृति के सानिध्य में ही निवास करते थे। इसलिए भारतीय समाज का प्रकृति के साथ साधर्म्य मिलता है। कई ऐसे त्यौहार भी भारतीय समाज में पर्यावरण पूरक है। प्रकृति का इतना सटीक और बारीकी से वर्णन प्रेमचंद की कहानियों में मिलता है जो उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता अभिव्यक्त होती है। जिससे उनका पर्यावरण पूरक दृष्टिकोण भी उजागर होता है। प्रेमचंद की पर्यावरण पूरक दृष्टि उनकी निम्नलिखित कहानियों में अभिव्यक्त होती है।

जिसमें पूस की रात, यह प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण कहानी है। प्रेमचंद की पूस की रात हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध ग्रामीण कहानी है जिसमें पर्यावरण केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कथा का एक सक्रिय तत्व है। कहानी में प्राकृतिक वातावरण, किसान के जीवन, उनकी आर्थिक स्थिति और मानसिक अवस्था को गहराई से प्रभावित करता है। प्रस्तुत कहानी में पर्यावरण दर्शन के विभिन्न आयाम निम्न रूप से वर्णन किए गए हैं । जिसमें प्राकृतिक वातावरण का यथार्थ चित्रण कहानी में हुआ है। कहानी का नाम ही उसे अर्थात पौष महीने की कड़ाके की ठंड, खुला, आकाश, रात का सन्नाटा और ठंडी हवा का अत्यंत सजीव वर्णन मिलता है। यह वातावरण कहानी में यथार्थ और संवेदनात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है। किसान और प्रकृति के परस्पर पूरक संबंध होते हैं। इस कहानी का मुख्य पात्र हल्कू का जीवन पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर है ।इसकी खेती ,जीविका और भविष्य मौसम के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर निर्भर करते हैं। जैसे,"पुस की अंधेरी रात! आकाश पर तारे भी ठिठुरते हुए मालूम होते थे। हल्कू अपने खेत के किनारे ऊख के पत्तों की एक छतरी के नीचे बांस के खटोले पर अपनी पुरानी गाढ़े की चादर ओढ़ पड़ा कांप रहा था।"1 इससे स्पष्ट होता है कि, ग्रामीण जीवन में पर्यावरण का कितना महत्वपूर्ण स्थान है । इस कहानी के हल्कू को काम करना पड़ता है अर्थात प्रकृति के सानिध्य में हल्कू का अटूट रिश्ता है। कड़ाके की ठंड हो या कड़ाके की धूप हो यह दोनों भी हल्कू के लिए चुनौती बन जाती है।पर्याप्त वस्त्र और संसाधनों के अभाव में वह ठंड से जुझता है ।

यहां पर्यावरण की कठोरता केवल प्राकृतिक घटना नहीं बल्कि किसान की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था को भी उजागर करती है ।कहानी के मुख्य पात्र के रूप में हल्कू का केवल पर्यावरण से ही नहीं है बल्कि उसके सानिध्य में रहने वाले जीवों के साथ भी परस्पर संबंध है । जैसे, उसने दिल में कहा - नहीं, जबरा के होते कोई जानवर खेत में नहीं आ सकता न "।2जैसे हल्कू का कुत्ता जबरा उसके साथ पूरी रात रहता है। जबरा का व्यवहार मनुष्य और पशु के आत्मीय संबंधों को दर्शाता है। यह कहानी सभी जीवों के सह -अस्तित्व और परस्पर संवेदना का संदेश देती है। प्रकृति एक और जीवन का आधार है तो दूसरी और कठोर परीक्षा भी लेती है । खेत किसान की आजीविका का स्रोत है लेकिन वही खेत ठंड और कठिन परिस्थितियों के कारण हल्कू के लिए पीड़ा का कारण भी बन जाता है। इस प्रकार कहानी में प्रकृति के द्वैत स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। मनुष्य और प्रकृति का संबंध परस्पर निर्भरता का है।पर्यावरण का प्रभाव सीधे मानव जीवन और आजीविका पर पड़ता है। पशु, मनुष्य और प्रकृति एक सांझा जीवन चक्र का हिस्सा है। सामाजिक-आर्थिक असमानताएं ,प्राकृतिक कठिनाइयों को और अधिक गंभीर बना देती है।

अर्थात प्रेमचंद की पूस की रात में प्रकृति का चित्रण अत्यंत यथार्थ जीवंत और प्रभावशाली है।जैसे,"जानवर खेत चर रहे थे। फसल तैयार है। कैसे अच्छी खेती थी, पर यह दुष्ट जानवर उसका सर्वनाश किया डालते हैं।"3 यहां प्रकृति केवल सौंदर्य का विषय नहीं बल्कि किसानों के जीवन संघर्ष में भी सहभागी है। कहानी में पूस(पौष) महीने की ठिठुरती रात, शीतल हवा, खेत, अंधेरा और खुला आकाश मिलकर ऐसा वातावरण रचते हैं, जो मुख्य पात्र हल्कू की कठिन परिस्थितियों को और अधिक मार्मिक बना देता है। कहानी में पूस की रात की भीषण ठंड प्रकृति के कठोर रूप को सामने लाती है । हल्कू के पास पर्याप्त गर्म कपड़े या कंबल नहीं है। इसलिए उसे खेत की रखवाली करते हुए ठंड से जूझना पड़ता है। जैसे, ''जब किसी तरह न रहा गया तो उसने जबरा को धीरे से उठाया और उसके सिर को थपथपाकर उसे अपने गोद में सुला लिया। "4 इससे स्पष्ट होता है कि, प्रकृति मनुष्य के लिए जीवनदायिनी भी है और चुनौती भी।

दो बैलों की कथा यह प्रेमचंद की दूसरी कहानी है । जिसमें भी पर्यावरण के प्रति सम्मान व्यक्त होता है। इस कहानी में पशुओं के प्रति संवेदना और सह अस्तित्व का भाव दिखाई देता है। यह कहानी मनुष्य और पशु के संबंधों के माध्यम से पर्यावरणीय नैतिकता और जीव-जगत के प्रति सम्मान का संदेश देती है। प्रेमचंद की दो बैलों की कथा में पर्यावरण का दर्शन मानव पशु और प्रकृति के बीच गहरे संबंधों को अभिव्यक्त करता है। इस कहानी में पर्यावरण केवल प्राकृतिक पृष्ठभूमि नहीं है बल्कि जीवन मूल्य संवेदनशीलता और सहअस्तित्व का आधार है। प्रेमचंद ने ग्रामीण परिवेश, खेत- खलिहान, पशुओं और प्राकृतिक वातावरण के माध्यम से पर्यावरण चेतना को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है । दो बैलों की कथा इस कहानी में गांव, खेत, चरागाह, कच्चे रास्ते और खुला प्राकृतिक वातावरण भारतीय ग्रामीण जीवन की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। यह परिवेश मनुष्य और प्रकृति के घनिष्ठ संबंध को दर्शाता है। दो बैलों की कथा इस कहानी के मुख्य पात्र हीरा और मोती केवल बैल नहीं है बल्कि संवेदनशील जीव है। वह अपने स्वामी के प्रति निष्ठा, मित्रता और आत्मसम्मान का परिचय देते हैं। प्रेमचंद यह संदेश देते हैं कि, पशु भी पर्यावरण का महत्वपूर्ण अंग है और उनके प्रति दया तथा सम्मान आवश्यक है। "तुम मुझे इतना स्वार्थी समझते हो, हीरा? हम और तुम इतने दिनों एक साथ रहे हैं। आज तुम विपत्ति में पड़ गए,

तो मैं तुम्हें छोड़कर अलग हो जाऊं।"5 इस कहानी में पशुओं के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार और उनके अधिकारों का सम्मान करने की प्रेरणा मिलती है। यह पर्यावरणीय नैतिकता का महत्वपूर्ण पक्ष है जिसमें सभी जीवों के साथ करुणा और सहानुभूति रखने का संदेश निहित है

खेती करते समय किसानों के सहायक के रूप में बैलों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जिस प्रकार किसान जी तोड़ मेहनत करता है उसी प्रकार बैल भी सहायता करते हैं। खेती और पशुपालन ग्रामीण जीवन के आधार है। बैल खेती के प्रमुख सहयोगी है। इसलिए उनका जीवन सीधे प्रकृति और पर्यावरण से जुड़ा है। इस कहानी में यह स्पष्ट होता है कि, मनुष्य, पशु और प्रकृति एक दूसरे पर निर्भर है ।"लेकिन जानते हो, वह प्यारी लड़की, जो हमें रोटियां खिलाती है, उसी की लड़की है, जो इस घर का मालिक है, यह बेचारी अनाथ हो जाएगी"।6 भारतीय संस्कृति में पशुओं को परिवार का सदस्य और प्रकृति का अभिन्न अंग माना गया है। दो बैलों की कथा इसी सांस्कृतिक दृष्टि का संकेत करती है।

दो बैलों की कथा में पर्यावरण का चित्रण ग्रामीण प्रकृति और पशु जगत के माध्यम से अत्यंत प्रभावशाली रूप में हुआ है। कहानी का परिवेश गांव, खेत, खलिहान, चरागाह, कच्चे रास्ते और प्राकृतिक वातावरण से निर्मित है ।यह परिवेश केवल कथा की पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कहानी के पात्रों और घटनाओं को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है । कहानी के मुख्य पात्र हीरा और मोती बैल है जो किसान के जीवन और खेती के अभिन्न अंग है । उनका जीवन खेतों,हरियाली और प्राकृतिक परिवेश से जुड़ा हुआ है।प्रेमचंद ने इनके माध्यम से यह दिखाया है कि, मनुष्य और पशु एक दूसरे पर निर्भर है तथा दोनों का भी अस्तित्व प्रकृति से जुड़ा हुआ है। कहानी में पशुओं के प्रति संवेदनशीलता और करुणा का भाव प्रमुख है। "झुरी द्वार पर बैठा धूप खा रहा था। बैलों को देखते ही दौड़ा और उन्हें बारी-बारी से गले लगाने लगा। मित्रों की आंखों से आनंद के आंसू बहने लगे"।7हीरा और मोती केवल श्रम करने वाले पशु नहीं है बल्कि भावनाओं, आत्मसम्मान और मित्रता से युक्त जीव है । यह दृष्टि पर्यावरण के व्यापक अर्थ को प्रस्तुत करती है ।जिसमें मनुष्य के साथ-साथ पशु- पक्षी भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। ग्रामीण पर्यावरण का चित्रण कहानी को यथार्थ और जीवंत बनाता है।खेतों में काम करना, पशुओं की देखभाल, गांव का प्राकृतिक वातावरण और कृषि आधारित जीवन स्पष्ट करते हैं कि, मानव जीवन का आधार प्रकृति और पर्यावरण ही है।

प्रेमचंद की ईदगाह कहानी में पर्यावरण का चित्रण अत्यंत स्वाभाविक और यथार्थवादी और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है। यद्यपि यह कहानी मुखता: बालमन, गरीबी और मानवीय करुणा पर केंद्रित है । फिर भी इसमें ग्रामीण और प्राकृतिक परिवेश का सजीव वर्णन मिलता है। प्रकृति और सामाजिक वातावरण मिलकर कहानी की भावभूमि का निर्माण करते हैं ।कहानी की शुरुआत गांव की शांत और प्राकृतिक वातावरण से होती है।"कितना मनोहर, कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है। आज का सूर्य देखो,कितना प्यारा,कितना शीतल है"।8 ईद की सुबह का मनोहारी दृश्य, खेत-खलिहानों ,पेड़ - पौधे, खुला आकाश और गांव से शहर की ओर जाता रास्ता पाठक के सामने ग्रामीण पर्यावरण का सजीव चित्र उपस्थित करता है । बच्चे उत्साह के साथ ईदगाह की और जाते हैं और मार्ग में दिखाई देने वाली बगीचे, पेड़ तथा खुले मैदान कहानी को प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करते हैं। कहानी में ग्रामीण और शहरी पर्यावरण का अंतर भी दिखाई देता है ।" सड़क के दोनों और अमीरों के बगीचे हैं। पक्की चारदिवारी बनी हुई है। पेड़ों में आम और बिछिया लगी हुई है। कभी-कभी कोई लड़का कंकड़ी उठाकर आम पर निशाना लगाता है"।9 गांव का सरल शांत और प्रकृति से जुड़ा जीवन शहर की चहल-पहल, बाजार और भीड़भाड़ से भिन्न है । इस तुलना के माध्यम से प्रेमचंद ग्रामीण जीवन की सहायता और प्रकृति से उसके निकट संबंध को रेखांकित करते हैं। हामिद का अपनी दादी अमीना के लिए चिमटा खरीदना भी पर्यावरणीय दृष्टि से एक व्यावहारिक जीवन दृष्टि का संकेत देता ह

प्रेमचंद की पंच परमेश्वर कहानी न्याय, नैतिकता और मानवीय मूल्यों पर आधारित है। फिर भी इसमें ग्रामीण पर्यावरण का सजिव और यथार्थवादी चित्रण मिलता है। कहानी का परिवेश भारतीय गांव है जहां प्रकृति, सामाजिक जीवन और मानवीय संबंध एक दूसरे से गहराई से जुड़े हुए है । प्रेमचंद ने ग्रामीण वातावरण के माध्यम से यह दिखाया है कि, प्राकृतिक परिवेश मनुष्य के जीवन, व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करते है। कहानी में गांव के खुले वातावरण, खेत -खलिहानों, पेड़ - पौधों,चौपाल और पंचायत के दृश्य ग्रामीण जीवन की सहजता और प्रकृति के निकटता को व्यक्त करते हैं। जब सूर्य अस्त हो गया और चिड़ियों की कलरव युक्त पंचायत पेड़ों पर बैठी, तब यहां भी पंचायत शुरू हुई फर्श की एक-एक अंगुल जमीन भर गई, पर अधिकांश दर्शक ही थे "।10 पंचायत का आयोजन खुले स्थान पर होना भारतीय ग्रामीण संस्कृति और प्राकृतिक परिवेश के सामंजस्य का प्रतीक है। यह वातावरण न्याय, निष्पक्षता और सामुदायिक जीवन की भावनाओं को भी सदृढ करता है।कहानी में कृषि प्रधान समाज का चित्रण मिलता है जहां लोगों की आजीविका खेती और पशुपालन पर आधारित है । इससे स्पष्ट होता है कि, ग्रामीण जीवन पूरी तरह पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर है। प्रकृति यह केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक जीवन का आधार है। प्रेमचंद इस कहानी के माध्यम से यह भी संकेत करते ही कि, मनुष्य का सामाजिक जीवन प्राकृतिक परिवेश से अलग नहीं हो सकता। गांव की सरल जीवन शैली, सामुदायिक सहयोग और प्रकृति के साथ संतुलित संबंध पर्यावरणीय चेतना का अप्रत्यक्ष रूप प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रेमचंद की कहानियों ने प्राकृतिक परिवेश के माध्यम से यह दिखाया है कि, मनुष्य का सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन प्रकृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है।प्रेमचंद की कहानियों में प्रकृति सादगी, संतुलन और सामुदायिक भावना का प्रतीक बनकर सामने आती है। पूस की रात कहानी मानव और प्रकृति के गहरे संबंध तथा ग्रामीण जीवन की वास्तविकता को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती है। दो बैलों की कथा में पशुओं के माध्यम से स्वतंत्रता, आत्मसम्मान और संवेदनशीलता का संदेश दिया गया है। ईदगाह में बाल मन, गरीबी और पारिवारिक प्रेम की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है । साथ ही पंच परमेश्वर में न्याय, निष्पक्षता और सामाजिक संबंधों की महत्ता को प्रस्तुत किया गया है। प्रेमचंद की कहानियों में पर्यावरण का चित्रण प्रकृति और मानव जीवन के गहरे संबंधों को व्यक्त करता है उनकी रचनाओं में खेत, पेड़- पौधे, पशु- पक्षीयों और ग्रामीण परिवेश केवल दृश्य नहीं है बल्कि मानव जीवन के अभिन्न अंग है। उनकी कहानीयां यह बताती है कि, मनुष्य का जीवन प्रकृति पर निर्भर है। किस तरह से पशु और प्राकृतिक संसाधन एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। पूस की रात में मौसम और प्राकृतिक परिस्थितियों, किसान के संघर्ष को प्रभावित करती है। जबकि दो बैलों की कथा में पशुओं के प्रति करूणा और सहअस्तित्व की भावना दिखाई देती है।प्रेमचंद की प्रकृति दृष्टि, पर्यावरणीय संतुलन जीव- जगत के प्रति संवेदना और प्रकृति के सम्मान का संदेश देती है। उनकी कहानी यह समझ विकसित करती है कि, प्रकृति का संरक्षण मानव जीवन की सुरक्षा के लिए आवश्यक है। सामाजिक स्तर पर वे मानवता, न्याय और समानता का संदेश देती है जबकि पर्यावरणीय दृष्टि से वह मनुष्य और प्रकृति के संतुलित संबंध को प्रस्तुत करती है। प्रेमचंद का साहित्य आज भी इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि वह समाज और पर्यावरण दोनों के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार दृष्टिकोण विकसित करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ सूचि :-

1. पुस्तक: प्रतिनिधि कहानियां रचनाकार: प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन संस्करण -1990, पृष्ठ क्रमांक- 42
2. पुस्तक: प्रतिनिधि कहानियां रचनाकार: प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन संस्करण -1990, पृष्ठ क्रमांक- 43
3. पुस्तक: प्रतिनिधि कहानियां रचनाकार: प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन संस्करण -1990, पृष्ठ क्रमांक- 45
4. पुस्तक: प्रतिनिधि कहानियां रचनाकार: प्रेमचंद, राजकमल प्रकाशन संस्करण -1990, पृष्ठ क्रमांक- 46
5. पुस्तक - क्षितिज भाग -1, ,रचनाकार प्रेमचंद- प्रकाशन एनसीईआरटी संस्करण- 2022 ,पृष्ठ क्रमांक - 05
6. पुस्तक - क्षितिज भाग -1,रचनाकार प्रेमचंद- प्रकाशन एनसीईआरटी संस्करण- 2022, पृष्ठ क्रमांक - 06
7. पुस्तक - क्षितिज भाग -1, रचनाकार प्रेमचंद- प्रकाशन एनसीईआरटी संस्करण- 2022 ,पृष्ठ क्रमांक- 08
8. पुस्तक अंतरा- भाग -1 रचनाकार प्रेमचंद, प्रकाशन एनसीईआरटी ,संस्करण 2022 पृष्ठ क्रमांक- 9
9. पुस्तक अंतरा- भाग -1 ,रचनाकार प्रेमचंद, प्रकाशन एनसीईआरटी ,संस्करण 2022 पृष्ठ क्रमांक - 9
10. पुस्तक प्रेम द्वादशी- रचनाकार- प्रेमचंद, सन्मार्ग प्रकाशन 1998, पृष्ठ क्रमांक- 90